IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

साहित्य में रिश्तों मे बदलाव की गाथा कल से आज तक

प्रस्तुति–डॉ. सुनीता दुरंगल
एसोसिएट प्रोफ़ेसर,
दौलत राम कॉलिज,
हिन्दी विभाग,
दिल्ली विश्वविद्यालय

सदियाँ गवाही देती है मानवीय सभ्यता, संस्कृति, परंपराओं, रीति, रस्मों के कभी न टूटने वाले सूत्रों की जिसमें छिपी रहती है एक ऐसी गाथा जो हर बार बचा लेती है रिश्तों की गहराईयों को रिश्तों की असीमताओं को– ऐसी ही कहानियाँ दोहराती हैं, जिन्हें स्वर दिए वाल्मीकि ने, जिनकी गाथा गाते थे व्यास, जिन्हें बार–बार टूटने से बचा लिया कालिदास के स्वरों ने।

मानवीय विषमताओं जटिलताओं से भरे इतिहास ने हर बार गवाही दी है उन रिश्तों की जिन्हें पालित कर रही थी सीता–द्रौपदी, राधा, शकुंतला। इतना ही नहीं हर उस कहानी की तहों में छिपी है एक रीति, एक रस्म, एक मर्यादा, एक संस्कार जिसे हर उस चरित्र ने निभाया जो आज भी भारतीय सम्यता संस्कार में अपनी एक अलग पहचान रखता है।

जहाँ लगातार एक लड़ाई लड़ी जा रही है कभी खुद तो कभी हालातों से, कभी सत्ता, व्यवस्था, समाज की मान्यताओं से। बीते युगों की बात करें तो नज़र आते हैं वे रिश्ते जो आज न जाने कहाँ खो गए हैं– शायद ज़िंदगी के उलझावों में–? और अगर शेष भी है तो न जाने कब टूट जाएँगे कोई नहीं जानता, चाहे वे नर–नारी के संबंध हो, भाई–भाई का रिश्ता हो, गुरु–शिष्य का रिश्ता हो या पिता–पुत्र का रिश्ता तो–आज हर रिश्ता एक दूरी में सिमटता जा रहा है, आज हर वो रिश्ता जो कल तक इतिहास की गवाही बना आज बिखर रहा है आज वो महज़ एक नाम भर रह गया है।

रामायण की बात करें तो नज़र आता है एक ऐसा चरित्र जिसे समाज हर बार गवाही देने के लिए बाध्य करता रहा है और वो देती रही एक हीं परीक्षा बार–बार बिना उफ किए। वो सीता जो

रघुकुल की कुलवधू है, जो पत्नी है राम की, मर्यादा है अयोध्या की वे जो करती है मर्यादा निर्वाहण के लिए, रीति परंपराओं को निभाने के लिए–उन्हें कभी किसी भी बात से इंकार न था क्योंकि वे जानती थी 'रघुकुल रीति सदा चली आई, प्राण जाये पर वचन न जाए–

सीता को स्वयंवर का अधिकार तो मिला पर बंधनों के बिन तोड़े वचन निभाने अनिवार्य था। राम ने धनुष तोड़कर सीता को पाया और सीता ने उस वरण में पाई मर्यादा पालित करने की वो परंपरा–जो भारतीय समाज की रीति रही है। किन्तु आज के दौर में ये रीतें हौले हौले टूट रही हैं। रघुकुल की हर रीत निभाती सीता राम के साथ वन–वन भटेकती रही। चौदह बरसों तक की वनवास की अवधि जो राम को मिली–पूरी हो जाती है वन से लौटते ही–पर सीता का वनवास कभी खत्म होता नज़र नहीं आता। चौदह बरसों के के बात भी सीता का वनवास वाल्मीकि आश्रम में गुज़र बसर करता नज़र आता है–वे वाल्मीकि जो उन्हें पिता तुल्य प्यार, स्नेह सुरक्षा दे रहे थे, जो अयोध्या का समाज उन्हें नहीं दे पाया–एक पूरी की पूरी समाज व्यवस्था–सीता को कुछ नहीं दे पाई जो एक पुत्रवधु को दिया जाना चाहिए था। पर वाल्मीकि आश्रम में वाल्मीकि ऋषि ने सीता को दिया बेखौफ जीने का सुरक्षित वन्य संपदाओं के बीच पलता प्यार और अधिकार। प्रकृति की कन्या सीता सुखी थी उनकी पनाह में–वो वन्य समाज और ऋषि सीता से कोई सवाल नहीं पूछते सीता को सौंपते हैं तो सिर्फ और सिर्फ प्यार, सम्मान और आशीर्वाद। जिसे पूरा का पूरा रघुकुल नहीं दे पाया वो वाल्मीकि आश्रम और ऋषि वाल्मीमि ने उन्हें दिया। पर आज वे बेखौफ माहौल शायद ही किसी नारी को मिल पा रहा हो–जो वन्य प्रांत की गोद में सीता को मिला। सीता कभी किसी बात से इंकार नहीं करती, वे नहीं पूछती कोई सवाल राम से? सीता अपनी मर्यादा निभाना जानती है–पर आज ये सीता कहीं गुम सी हो गई है आज न वो मर्यादा रही, न परंपरा, न सीता की वचनबद्वता।

इसी समाज व्यवस्था में बरबस रिश्तों की गहराई को स्वर सौंपती नज़र आती है शकुंतला, वो शकुंतला जो दुष्यन्त का इंतज़ार करती है, वे दुष्यन्त जो शकुंतला को प्यार की निशानी अंगूठी देकर गंधर्व रीति से विवाह करके अपने नगर लौट गए थे। उसी दुष्यन्त के प्यार में खोई शकुंतला कण्व ऋषि के आश्रम में निर्भीक जी रही है। वे कण्व अ जो उन्हें पिता का स्नेह, प्यार, दुलार सब देते हैं पर दुष्यंत के समाज से कोई सवाल नहीं पूछते और न ही शकुंतला ऐसा करती है। पिता का स्नेह–प्यार ही

शकुंतला का साहस बनकर जी रहा था, भले ही दुष्यंत लौटे या न लौटे–पर जब दुयंत लौटे भी तो ये देख अचरच में थे–एक नन्हा सा बालक जो शेरों से बेखौफ खेल रहा है वह कौन है? किसने जन्म दिया? किसका पुत्र है वो? कौन है माँ इसकी..? जैसे असंख्य सवाल दुष्यंत को उसका संसार सौंप देता है और शकुंतला का खोया प्यार–दुष्यंत को मिली शकुंतला और भरत। और पिता ने निभाई कण्व ऋषि बनकर आश्रम की हर रीति, हर संस्कार और हरेक मर्यादा। जो आज साहित्य समाज में कहीं नज़र नहीं आता है। प्यार आज के सभ्य समाज में महज़ एक खेल का नाम मात्र रह गया है जहाँ जज़्बात, मर्यादा, संस्कार दूर–दूर नज़र नहीं आते हैं। सिर्फ शकुंतला ही नहीं एक अन्य चरित्र भी भारतीय समाज व्यवस्था में बदलते रिश्तों की परिभाषा गढ़ी है–यशोधरा वो यशोधरा, जो गौतम की पत्नी राजमर्यादा है, जिन्हें सोता छोड़कर गौतम मोक्ष पाने के लिए निकल गए रात के अंधेरों में और गौतम को मोक्ष के रुप में मिला यशोधरा से राहुल'–जिसे माँगने आए थे गौतम–'बुद्व' बनकर यशोधरा के द्वारा हर सच को जानते थे वे, फिर भी यशोधरा के द्वार गए और लुट लाए यशोधरा का संसार–देवी भीक्षा दो–के स्वरों में छिपी स्वार्थ भावना ने राहुल पा लिया यशोधरा पुत्र–'राहुल–वे जानते थे कि यशोधरा के द्वार जाने पर उन्हें मिलेगा 'राहुल'–मोक्ष पाने गौतम गए थे पर राजमर्यादा को निभाती यशोधरा को मिला एक ऐसा मोक्ष–जो गौतम बुद्व को मिलकर भी नहीं मिल पाया। आज के दौर में ऐसा संभव की परिकल्पना से बाहर है जो यशोधरा ने किया वह यशोधरा ही कर सकती थी। एक सवाल आज भी शेष है रिश्ते निभाने की रीति कोई यशोधरा से सीखे–अगर रिश्ते निभाने हैं तो इसी क्रम में नज़र आती है मीरा–जो गाती है प्रणय के गीता। कृष्ण के प्यार में नगर–नगर, गाँव–गाँव भटकती रही और राजपूती समाज व्यवस्था में बँधकर मीरा न जाने कितने जुल्म सहती रही और बेखौफ गाती रही–'मेरो तो गिरिधर गोपाल दूसरो न कोये–दरबारी सम्यता संस्कृ ि के हर संस्कार को दरकिनार करती मीरा कभी भी हालातों से समझौता नहीं करती। सवाल उठते हैं आखिर क्योंकर सहा मीरा ने, क्या सिर्फ इसलिए कि बचपन में ही कृष्ण से ब्याह रचा बैठी थी। वह पुरुष समाज के वर्चस्व से कोई समझौता नहीं करती तभी तो ढंके की चोट पर कहती है–जो मैं ऐसा जानती प्रीत किये दुःख होय, नगर ढिंढोरा पिटती प्रीत न करयो कोये।'–ढिंढोरा पिटने में छिपी है वो सच्चाई–जो एक नारी के स्वरों में पुरुष समाज में देखौफ स्थापित कर रहा है अपना अस्तित्व। इस तरह का जोखिम शायद ही कोई पुरुष उठा पाने का साहस रखता हो,

वो मीरा ही थी जो इस तरह का जोखिम उठाने का दमखम रखती थी, इसी वजह से हर बार एक खुली चुनौती अपने गीतों के ज़रिये समाज को देती रही। किंतु आज इस तरह का दमखम या ढिंढोरा पिटने का साहय शायद ही कोई रखता हो जो मीरा के समकक्ष आ ठहने।

गुरु–शिष्य परंपरा में एकलव्य की कहानी आज भी दोहराई जाती है। वो शिष्य जो द्रोणाचार्य को गुरु मानकर धुर्नुविद्या पाता है और गुरु दक्षिणा में अपना अंगूठा गुरु को सौंप देता है ऐसा एकलव्य ही कर सकता था–आज न वो एकलव्य न ऐसी परंपरा–जो गुरु–शिष्य परंपरा में अपना अलग स्थान जोड़ दे।

भारतीय मनीषा में अपना अलग ही महत्व रखने वाले ये सभी चरित्र चाहे वे सीता हो, शकुंतला हो, द्रोपदी हो यशोधरा हो या मीरा–रिश्तों को बांधते ही नहीं अपनी हर मर्यादा निभाते नज़र ओ हैं।

सीता जो राम के समाज व खुद राम को कुछ न कहकर भी बहुत कुछ ऐसा सौंप रही थी जिसे सदियाँ दोहराती हैं। राम का वनवास भले ही खत्म हो गया हो–पर सीता का वनवास जारी रहा। दोहरे निर्वासन का दंश झेलती सीता राम नगर के वनों में ताउम्र रही जहाँ उसकी प्रसव वेदना के दर्द को महज़ जंगल के वन्य पशु–पक्षी वृक्ष लताएँ व वनकन्याएँ जी रही थी पर इस बात से अनजान सीता के राम कभी सीता को खोजने वन नहीं लौटे। प्रसव उठते हैं क्या राम सीता को भुला बैठे थे राज कार्यों की आड़ में? या राम सीता के दर्द में शामिल नहीं होना चाहते थे सिर्फ इसलिए कि वे अपने पूर्वजों को दिए वचनों में बाँधे–कर्त्तव्यों का निर्वाहरण कर रहे थे, क्या रघुकुल की मर्यादा यही कहती थी? क्या हर रीत सीता निभाएगी ये कहीं तय किया गया था? क्या राम इस बात से अनजान थे कि सीता जिस वक्त दोबारा निर्वासित हुई वह गर्भवती थीं? अग्नि को साक्ष्य मानकर किए गए विवाह के चनों को राम कैसे भूल गए थे? राम का समाज सवाल करता तो है किन्तु लांछन राम पर नहीं सीता की ओर आ रुकते हैं, सीता, वचन बद्वत में बंधी अग्नि परीक्षा से भी इंकार नहीं करती। सिर्फ और सिर्फ रघुकुल की रीत निभाती रहे–क्या इसलिए? या वे रिश्तों को किसी भी तरह की जाँच से बचा रही थी।

सीता ने अपने हर संस्कार को निभाया है पर राम वे भी तो संस्कारों की भाषा, भली–भांति जानते थे–वे क्यों कर चुप रहे? राजा के कर्तव्यों में बंधे वे सीता को निर्वासित करते हैं पर अग्नि के चारों ओर लिए फेरों में जिस वचनवद्वता की बात वे करते हैं उसे क्यों भूले वे। आरोपित तो राम भी किए आ

सकतेथे। वनवास के दौरान, सीता, हरण के बाद राम भ्झी तो अकेले थे? पर राम का समाज राम से कोई सवाल नहीं करता हर सवाल सीता के सामने हैं। पर वे सीता की मर्यादा ही है जो वर निभाती रही है रघुकुल को हर दाग से बचाती रही सीता, और हर बार साक्ष्य देती रही सीता/कभी निर्वासित होकर कभी अग्नि परीक्षा देकर।

रिश्तों में बदलाव वक्त के साथ–साथ होते रहे हैं पर जहाँ तक इंतज़ार का सवाल आता है शायद ही दस बरसों तक कोई करता है पर कालिदास के अभिज्ञान शकुंतला की नायिका शकुंतला दुष्यंत के इंतज़ार में कण्व ऋषि के आश्रम में दस बरसों तक अपने नन्हें से पुत्र के साथ रही। दुष्यंत भले ही भूल गए शकुंतला को, पर शकुंतला गंधर्व रीत और प्रकृति को साक्ष्य मानकर किए विवाह की यादों में सिमटी दुष्यंत का इंतज़ार का भ्झी अपना ही एक अलग सुखद एहसास होता है भारतीय परंपरा में ऐसे कई उदाहरण नज़र आते हैं जो रिश्तों को खिरने टूटने से बचा लेते हैं महज़ एक इंतज़ार के ज़रिए कुछ–कुछ शकुंतला की ही तरह/राधा भी करती है, कृष्ण का इंतज़ार। कृष्ण लौटे या न लौटे पर राधा का है कृष्ण के लौटने का इंतज़ार कृष्ण कर्तव्यों को निभाते ज़रुर हैं पर राधा को भूले नहीं थे। आज के भागमभाग के दौर में क्या बदल नहीं गए यह इंतज़ार का स्वरुप/इस इंतज़ार से परिभाषित होता है–प्यार, जो सीता ने किया राम से, जो राधा ने किया कृष्ण से, जो यशोधरा ने किया गौतम से, जो शकुंतला ने किया–दुष्यंत से।

वक्त चाहे जो हो आज का उत्तर आधुनिकतावादी दौर बहुत कुछ दए को स्थापित भले ही कर रहा हो पर जो बीत गया उसे निखारने से इस दौर का एक ऐसा सच अनावृत होता है जिसमें रिश्तों की परिभाषा में परिवर्तन की कहानियाँ गढ़ी जा रही हैं। रिश्तों के बदलने से प्यार भी एक अलग ही ज़मीं पर आ खड़ा हुआ है मर्यादा, परंपराएँ, संस्कार, सभी में परिवर्तन देखें, व महसूस किए जा सकते हैं जिन्हें आज सजोने की ज़रुरत फिर से महसूस होती है तभी भारतीय परंपराएँ, रीति–संस्कार व जीवन मूल्यों को सुरक्षित किया जा सकता है।

आज जो भी लिखा व कहा जा रहा है चाहे कविता, कहानी, नाटक या उपन्यास है। सभी में एक ही कहानी सुनाई पड़ती है–भूमंडलीकरण, उपभोक्तावादी, बाजारवादी संस्कृति पा रहे हैं–जो बीते युगों में कहाँ सुना व किया जा रहा था वे रिश्ते थे–चाहे समाज की संरचना–आज बदलाव के दौर में बहुत कुछ

बदलाव है और बहुत कुछ बदल भी जाएगा। जो बदल गया है गुम हो रहा है। वे गहराईयों आज अपनी गरमाहटे खो रही हैं वे रिश्ते आज कहीं सहमें से, घबराये से दूर खड़े अपने होने की गवाही दे रहे हैं–जो थे–वो आज होकर भी नहीं हैं।